

(Demonstration Method)

वैज्ञानिक घटना को दृश्य के रूप में प्रस्तुत करना तकनीकी भाषा में 'प्रदर्शन' (Demonstration) कहलाता है। इस विधि में 'मूर्त से अमूर्त' (From concrete to abstract) — यह शिक्षण सूत्र एक व्यावहारिक, सफल एवं उपयोगी सूत्र स्वीकार किया गया है। अधिगम (सीखने) की प्रक्रिया में अमूर्त विषय-वस्तु का ज्ञान छात्र के मस्तिष्क में स्थायी नहीं रह पाता जबकि इसके विपरीत मूर्त ज्ञान पर्याप्त सीमा तक स्थायी रहता है। प्रदर्शन विधि इसी सिद्धान्त पर आधारित है।

प्रदर्शन विधि में शिक्षक छात्रों के सामने प्रयोग का प्रदर्शन करता है तथा प्रयोग से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों की व्याख्या प्रस्तुत करता है। प्रदर्शन के समय छात्र भी सक्रिय रहता है। इस प्रकार पाठ द्विपक्षीय हो जाता है जिसके अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्रों की पाठ में लगातार रुचि बनी रहती है। इसके अलावा प्रदर्शन विधि में छात्रों की निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का भी पर्याप्त विकास होता है। उदाहरणार्थ— सल्फ्यूरिक अम्ल की चीनी पर प्रक्रिया दिखाने के लिए शिक्षक छात्रों के सम्मुख तत्सम्बन्धी प्रदर्शन प्रस्तुत करता है।

प्रदर्शन विधि के गुण (Merits of Demonstration method) — (1) प्रदर्शन के माध्यम से वैज्ञानिक घटनाओं का अधिक स्पष्टीकरण सम्भव है तथा घटनाओं का अधिक स्थायी प्रभाव छात्रों के मस्तिष्क पर छोड़ा जा सकता है। प्रदर्शन अधिक रुचिकर भी होते हैं।

(2) यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें स्मृति और कल्पना पर निर्भर रहने के बजाय छात्र वस्तु को मूर्त रूप में देखते हैं।

(3) प्रदर्शन द्वारा छात्रों को सूक्ष्म प्रेक्षण का अभ्यास कराया जा सकता है।

(4) शिक्षक के लिये समय और शक्ति की दृष्टि से प्रदर्शन अधिक उपयुक्त विधि है। प्रदर्शन के दौरान शिक्षक का अपना नियन्त्रण रहता है, अतः वह शिक्षण बिन्दुओं का अधिक स्पष्ट निर्देशन कर सकता है।

(5) वह विधि उस समय अधिक उपयोगी हो जाती है जबकि यन्त्र या उपकरण बहुत ज्यादा कीमती हों तथा उनके टूटने व बिगड़ने का खतरा हो। पारे की बड़ी मात्रा में व्यवस्था करना कठिन है लेकिन अध्यापक द्वारा प्रदर्शन के लिए जुटाना सम्भव है। कुछ उपकरणों को इतनी सावधानी से काम में लाना होता है कि उन्हें छात्रों के हाथ में नहीं सौंपा जा सकता। इन सभी परिस्थितियों में प्रदर्शन ही एक आसान और श्रेष्ठ विधि है।

(6) यह विधि अन्य विधियों की अपेक्षा बहुत कम खर्चीली (मितव्ययी) है। इस विधि में समय की भी बचत होती है क्योंकि थोड़े समय में ही अनेक प्रयोग किये जा सकते हैं।

(7) प्रदर्शन में परिणाम के तत्काल ज्ञान से छात्रों को प्रदान किये गये ज्ञान का पुनर्बलन होता है और उन्हें वैज्ञानिक सत्यों के अन्वेषण के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रदर्शन विधि के दोष या सीमायें (Demerits of Demonstration method) — (1) यह विधि एक शिक्षक-केन्द्रित विधि है ।

(2) प्रायः संयोजित उपकरण ही कक्षा के सामने लाया जा सकता है । अतः सभी छात्रों को उपकरण के विभिन्न अंगों के पूरे परिचय का अवसर नहीं मिल पाता ।

(3) प्रदर्शन विधि में व्यक्तिगत विधिप्रता के लिए कोई स्थान नहीं है । मन्द बुद्धि और प्रतिभाशाली छात्रों को सामान्य छात्रों के साथ एक ही गति से चलाया जाता है ।

(4) अधिकांश छात्र निष्क्रिय रहते हैं जबकि शिक्षक के साथ कुछ छात्र ही सक्रिय रह पाते हैं ।

(5) इस विधि में कार्य करके सीखने (Learning by doing) के सिद्धान्त के लिये कोई महत्त्व नहीं है ।

(6) छात्र-केन्द्रित विधि न होने की वजह से छात्रों में प्रयोगशाला सम्बन्धी अपेक्षित कौशल का विकास नहीं हो पाता ।